नवसंवत्सर यानी सृष्टि का प्रथम दिवस

नवसंवत्सर यानी भारतीय नववर्ष अर्थात् हिन्दू नववर्ष प्रत्येक वर्ष चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ होता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार ब्रह्मा जी ने इसी दिन सृष्टि की रचना की थी। यह सचमुच नया वर्ष है। जब सर्वत्र नयापन दृष्टिगोचर हो तो उसे ही नया कहा जा सकता है। चैत्र मास के प्रकृति में नयापन दिखाई देता है, मौसम में नयापन आता है। पतझड़ के बाद ग्रीष्म ऋतु के आगमन पर नई फसल के साथ एक नई उमंग और उत्साह सर्वत्र दिखाई देता है। जगत् जननी माँ भगवती के भी रूपों की उपासना का पर्व नवरात्र में प्रकृति की प्रतीक शैलपुत्री की आराधना से इस दिवस की शुरुआत होती है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का राज्याभिषेक इसी दिन हुआ। शकों को हराकर महान् प्रतापी सम्राट विक्रमादित्य का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था, तभी से विक्रम सम्वत् की शुरुआत भी हुई। भारत के अन्दर सभी जन्मोत्सव, सभी विवाहोत्सव, सभी मांगलिक एवं शुभ कार्य की गणना विक्रम सम्वत् से ही होती है। अतः नवसंवत्सर ही वास्तविक, पौराणिक, प्राकृतिक और वैज्ञानिक नववर्ष है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही अनेक संवत्सर प्रारम्भ हुए। सृष्टि के प्रारम्भ में अंधकार यानी अमावस्या थी। ब्रह्मा जी ने सूर्य, पृथ्वी, चन्द्र, तारे, नक्षत्र बनाए, अर्थात् अमावस्या के बाद सूर्योदय हुआ। भारतीय दिन की शुरुआत सूर्योदय से होती है न कि मध्यरात्रि में। पूर्णिमा को चन्द्रमा जिस नक्षत्र में होता है उसी आधार पर मास का नाम रखा गया है। जैसे चित्रा नक्षत्र से चैत्र, विशाखा नक्षत्र से वैशाख, ज्येष्ठ नक्षत्र से जेठ, श्रावण नक्षत्र से सावन, भाद्रपद नक्षत्र से भादो आदि नाम पड़े। हिन्दू कालगणना को अगर आज के प्रचलित ईसाई कलेण्डर से तुलना करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि ईसाई कलेण्डर पूरी तरह से काल्पनिक और अवैधानिक है। वास्तव में यह एक रोमन कलेण्डर है जो आरम्भ में दस महीनों का होता था व इसकी शुरुआत मार्च से होती थी। अतः उसमें दसवां महीना दिसम्बर माना गया। ईसा से लगभग 600 वर्ष पूर्व

इसे 12 महीनों का किया गया। तब हर महीने में 30 दिन होते थे। ईसा से लगभग 48 वर्ष पूर्व इसमें संशोधन करके 1 जनवरी को नया वर्ष शुरू कर दिया गया व विषम नम्बर वाले महीनों में 31 दिन तथा सम नम्बर वाले महीनों में 30 दिन कर दिए गए। इसके कारण वर्ष में 366 दिन हो गए अतः फरवरी महीने को 29 दिन का कर दिया गया। ईसा से 400 वर्षों बाद तक यही कलेण्डर चला। बाद में राजा अगस्तस् सीजर जिसके नाम पर अगस्त महीना था, को खुश करने के लिए अगस्त को 31 दिन का कर दिया गया। जिससे फरवरी को 28 दिन का करना पड़ा। पुनः इसमें संशोधन करके सितम्बर को 30, अक्टूबर को 31, नवम्बर को 30 तथा दिसम्बर को 31 दिन का किया गया। इससे 365 दिन तो सही हो गए किन्तु कालगणना की वजह से 16वीं सदी तक आते आते इस कलेण्डर में-11 दिन का अन्तर आ गया। तब 4 अक्टूबर, 1582 को तत्कालीन पोप ग्रेगरी ने आदेश देकर कलेण्डर में 11 दिन गायब कर दिए व सीधे 4 अक्टूबर की जगह 15 अक्टूबर कर दिया गया अर्थात् अपनी स्थापना से लेकर अब तक इस कलेण्डर में चार बार व्यापक संशोधन हुए हैं। इस तरह यह कलेण्डर पूर्णतया अवैज्ञानिक है। 1 जनवरी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी न तो कोई महत्त्वपूर्ण घटना से जुड़ा है, न ईसा के जन्म से और न मृत्यु से ही जुड़ा है। अपनी सुविधा व तुकबन्दी को मिलाकर पाश्चात्य देशों ने जो कलेण्डर प्रस्तुत किया आज हम अपनी अज्ञानतावश 1 जनवरी को नया वर्ष मान लेते हैं। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा यानी नवसंवत्सर पूर्णतया वैज्ञानिक नववर्ष है। यह न केवल वैज्ञानिक है अपितु अनेक महत्त्वपूर्ण धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक घटनाओं का साक्षी भी रहा है। दुर्भाग्यवश हम इस शुभ दिन को हीनतावश भूलकर पूर्णतया काल्पनिक, अवैज्ञानिक ईसाई नववर्ष 1 जनवरी व ईसाई कलेण्डर को मानते हैं। जो राष्ट्र और समाज अपने अतीत पर गौरव की अनुभूति नहीं कर सकता हो तो उसका भविष्य भी उज्ज्वल नहीं हो सकता। आज आवश्यकता है अपने नववर्ष की शुरुआत हम भारतीय नववर्ष से करें। यह प्रयास न केवल राष्ट्रीय स्वाभिमान को जागृत करने का प्रयास होगा अपितु सांस्कृतिक

धरोहर को बचाने के लिए भी आवश्यक है। आज आवश्यकता है कि हम पाश्चात्य अपसंस्कृति को त्यागकर अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं का अनुसरण करें। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा यानी भारतीय नवसंवत्सर अर्थात् हिन्दू नववर्ष उस शुभ संकल्प का एक पवित्र दिवस हो, यही पुरुष को पुरुषोत्तम बनाने, राष्ट्र के लिए शुभकारी, धार्मिक दृष्टि से मंगलकारी हो सकता है।